E-ISSN: 2706-8927
P-ISSN: 2706-8919
IJAAS 2019; 1(1): 192-196
http://www.allstudyjournal.com
Received: 18-05-2019
Accepted: 22-06-2019

सुमन कुमारी
शोधप्रज्ञा, विश्वविद्यालय
समाजशास्त्र विभाग, ल.ना.मि.वि.,
दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
सुमन कुमारी
शोधप्रज्ञा, विश्वविद्यालय
समाजशास्त्र विभाग, ल.ना.मि.वि.,
दरभंगा, बिहार, भारत

भारत में तीव्र जनसंख्या वृद्धि एवं अंतर पीढ़ी संघर्ष : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन

सुमन कुमारी

सारांश
भारत प्राचीन काल से ही जनसंख्या समूह का प्रधान क्षेत्र रहा है। प्राचीन और मध्य काल में प्राकृतिक आपदाओं, महामारियों, संक्रामक बीमारियों के प्रकोप तथा युद्धों आदि के कारण जनसंख्या की वृद्धि बहुत कम हो पाती थी और अनेक बार तो यह पहले से भी घट जाया करती थी। भारत में जनसंख्या की उल्लेखनीय वृद्धि 20वीं शताब्दी के तीसरे दशक से आरम्भ हुयी और इसकी गति स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् नियोजन काल में अधिक तीव्र हो गयी। चिकित्सा सुविधाओं के विस्तार तथा महामारियों के नियंत्रण से मृत्युदर में तीव्रता से कमी आती गयी जिससे मृत्युदर 30 प्रति हजार से घटकर 8 प्रति हजार तक आ गयी है किन्तु जन्मदर 35 प्रति हजार से घटकर 26 प्रति हजार तक ही गिर पायी है। इस प्रकार जन्मदर और मृत्युदर के मध्य भारी अंतर के कारण जनसंख्या में तेजी से वृद्धि होने लगी।

प्रस्तावना
आज पुरानी पीढ़ी एवं युवा पीढ़ी–दोनों की संख्या सही अनुपात में है। भारत की जनसंख्या पहले से ही बहुत अधिक है। विगत पांच दशकों में जनसंख्या में औसतन 2.0 प्रतिशत वार्षिक वृद्धि दर से बढ़ोत्तरी होने से लगभग 2 करोड़ जनसंख्या प्रति वर्ष बढ़ जाती है। तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या के लिए भोजन, वस्त्र, आवास, शिक्षा आदि से सम्बंधित विविध प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न हो रही हैं। भारत में तीव्र जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न प्रमुख सामाजिक– आर्थिक समस्याएँ निम्नलिखित हैं–

1. बेरोजगारी एवं निर्धनता : तीव्र गति से बढ़ती हुई जनसंख्या की तुलना में रोजगार के अवसर नहीं बढ़ पाने के कारण काम करने वाले लाखों लोगों को समुचित रोजगार नहीं मिल पाता है। यहाँ उद्योग, व्यापार, सेवाओं आदि द्वितीयक एवं तृतीयक क्षेत्रों का विकास अधूरा है और अधिकांश कार्यशील जनसंख्या कृषि भूमि पर आश्रित है। कृषि भूमि सीमित होने तथा यंत्रीकरण बढ़ने से कृषि में रोजगार के अवसर अधिक नही बढ़ पाते हैं। कृषि उत्पादकता कम होने तथा बेरोजगारी में निरंतर वृद्धि होने के कारण ग्रामीण निर्धनता भी लगातार बढ़ती जा रही है। ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों के लिए भारी संख्या में जनसंख्या के पलायन से नगरों में आवश्यकता से अधिक जनसंख्या का जमाव हो जाता है जिससे वहाँ भी बेरोजगारी बढ़ती जा रही है। नगरों में शैक्षिक बेरोजगारी अधिक है।

2. खाद्य समस्या एवं कुपोषण : भारत में अन्य विकासशील देशों की भांति खाद्य समस्या तथा कुपोषण की समस्या व्यापक है। बढ़ती जनसंख्या के कारण इसके एक भाग को भरपेट भोजन नहीं मिल पाता है। इसका जनस्वास्थ्य तथा कार्यक्षमता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। हमारे यहाँ भोजन का मुख्य आधार कृषि उत्पादन है जिसे जनसंख्या वृद्धि के अनुकूल दीर्घ काल तक नहीं बढ़ाया जा सकता। इसका एक दूसरा स्वरुप संतुलित भोजन का न मिलना भी है। निर्धनता रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाले लाखों परिवार कुपोषण के शिकार रहते हैं। कुपोषण के कारण ही भारत में मातृ मृत्युदर अधिक उच्च पायी जाती है। प्रति वर्ष बड़ी मात्रा में खाद्य सामग्री विदेशों से मंगानी पड़ती है जिससे देश की आर्थिक व्यवस्था और विकास कार्यक्रमों पर विपरीत प्रभाव पड़ता है।

3. आवास की समस्या : जैसे–जैसे जनसंख्या बढ़ती जाती है उसके रहने के लिए निवास गृह या आवास की मांग भी बढ़ती है। व्यापक निर्धनता के कारण ग्रामीण तथा नगरीय सभी क्षेत्रों में लाखों परिवार अपना निजी मकान बनवाने अथवा किराये पर मकान लेने में असमर्थ होते हैं। वे टूटी–फूटी झोपड़ियों में शरण लेने के लिए विवश होते हैं। ग्रामीण क्षेत्रों से नगरों के लिए भारी संख्या में जनसंख्या के स्थानांतरण से नगरों में भारी जनसंख्या का जमाव हो जाता है किन्तु निर्धनता, बेरोजगारी, आवास की कमी आदि के कारण बड़ी संख्या में लोग गंदी (मलिन) बस्तियों में रहने के लिए बाध्य हैं जहाँ पानी, बिजली, सड़क, शौचालय आदि की सुविधाएँ नहीं के बराबर होती हैं और

वातावरण अत्यन्त प्रदूषित होता है। कानपुर, दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता, चेन्नई आदि महानगरों की एक–चौथाई से लेकर एक–तिहाई तक जनसंख्या इन्हीं मलिन बस्तियों (स्लम) में जीवन बिताने के लिए विवश होती है।

4. आर्थिक विकास में अवरोध : जनसंख्या अधिक होने पर केन्द्रीय तथा राज्य सरकारों को अपनी आय का अधिकांश भाग जनसंख्या की प्राथमिक आवश्यकताओं– भोजन, वस्त्र आवास आदि की पूर्ति पर खर्च करना पड़ता है। इससे विकास कार्यों के लिए बहुत कम धन बचता है। जो विकास कार्य हो पाता है वह थोड़े ही समय में जनसंख्या बढ़ जाने पर अपर्याप्त और निरर्थक हो जाता है।

जनसंख्या की सामाजिक–आर्थिक संरचना :

जनसंख्या संघटन या जनसंख्या संरचना द्वारा जनसंख्या के उन पक्षों का निरुपण किया जाता जिनकी माप की जा सकती है। अतः इसके अंतर्गत उन तत्वों को सम्मिलित किया जाता है जिनके आंकड़े एकत्रित किए जाते हैं। भारतीय जनगणना में सामान्यतरू लिंग, वैवाहिक स्थिति, परिवार के आकार, व्यवसाय, ग्रामीण–नगरीय अनुपात, शैक्षिक स्तर, भाषा, धर्म, जाति आदि से सम्बंधित आकड़े एकत्रित किए जाते हैं। इस भाग में लिंग संघटन, आयु संघटन, व्यावसायिक संरचना, धार्मिक संरचना और साक्षरता की समीक्षा की गयी है।

1. लिंग संघटन : लिंग संघटन या यौन संघटन का अर्थ है किसी जनसंख्या में स्त्रियों और पुरुषों का अनुपात। इसे लिंगानुपात द्वारा व्यक्त किया जाता है। इसकी गणना प्रति 1000 पुरुषों पर स्त्रियों की संख्या के रुप में की जाती है। भारत में लिंगानुपात पुरुषों के पक्ष में है। जनगणना 2011 के अनुसार भारत में लिंगानुपात 940 स्त्रियाँ प्रति 1000 पुरुष है। बीसवीं शताब्दी के आरंभ (1901) में यह लिंगानुपात 972 स्त्रियाँ प्रति हजार पुरुष था। तब से लेकर निरंतर लिंगानुपात में गिरावट की प्रवृत्ति रही है। भारत के नगरीय क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में लिंगानुपात निम्न है। इस भिन्नता का मुख्य कारण लिंगपरक ग्रामीण–नगरीय प्रवास है। ग्रामीण क्षेत्रों से बड़ी संख्या में पुरुष रोजगार, शिक्षा आदि के लिए नगरों को प्रवास करते हैं और अधिकांश लोगों का परिवार ग्रामों में ही रहता है। इस प्रकार नगरों में पुरुषों की और ग्रामीण क्षेत्रों में स्त्रियों की संख्या में तुलनात्मक वृद्धि हो जाती है।

2. आयु संघटन : आयु संघटन या आयु संरचना किसी जनसंख्या में आयु वर्गों के अनुसार जनसंख्या के वितरण को प्रदर्शित करता है। जन्मदर, मृत्युदर और प्रवास आयु संघटन को प्रभावित करने वाले भौगोलिक कारक हैं।

3. व्यावसायिक संरचना : जनसंख्या की व्यावासयिक संरचना का तात्पर्य कुल कार्यशील जनसंख्या (कुल कर्मियों) का विभिन्न व्यावसायिक वर्गों में वितरण से है। व्यवसाय का अर्थ उन आर्थिक क्रियाओं से है जिनसे व्यक्ति को आय प्राप्त होती है।

4. धार्मिक संरचना : धर्म का सम्बंध मनुष्य की भावनाओं, श्रद्धा और भक्ति से है जो उसका सम्बंध अलौकिक शक्ति से जोड़ती है। धर्म मनुष्य के आंतरिक जीवन को तो प्रभावित करता ही है, साथ में उसके सामाजिक, सांस्कृतिक तथा आर्थिक जीवन को भी प्रभावित करता है। धर्म सामाजिक व्यवस्था को नियंत्रित करने का एक सशक्त साधन भी है। भारत प्राचीन काल से ही विभिन्न धर्मों की उत्पत्ति और प्रसार का मूल केन्द्र रहा है। भारत अनेक धर्मों का देश है। भारत में मुख्य रुप से 6 धर्म–हिन्दू, इस्लाम, ईसाई, सिक्ख, बौद्ध, और जैन के अनुयायी अधिक हैं। इनके अतिरिक्त यहाँ कुछ पारसी, यहूदी तथा अन्य जनजातीय धर्मों के मानने वाले लोग भी हैं। प्रायः सभी धर्मों में अनेक सम्प्रदाय या मतान्तर वर्ग भी पाये जाते हैं।

5. साक्षरता : साक्षरता का अर्थ है व्यक्ति के साक्षर (अक्षर ज्ञान) होने कागुण। जो व्यक्ति कम से कम किसी एक भाषा में पढ़ना और लिखना जानता है तथा अपना हस्ताक्षर बना लेता है उसे साक्षर माना जाता है। किन्तु शिक्षित होने के लिए पाठशाला उत्तीर्ण करना भी आवश्यक है। कुल जनसंख्या में साक्षर व्यक्तियों के प्रतिशत को सामान्यतः साक्षरता दर कहा जाता है। स्वतंत्र भारत की प्रथम जनगणना (1951) के अनुसार भारत की 16.67 प्रतिशत जनसंख्या साक्षर थी। विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं में साक्षरता तथा शिक्षा के उत्थान हेतु औपचारिक शिक्षा के साथ ही अनौपचारिक शिक्षा की भी व्यवस्था की गयी और शिक्षा के विकास के लिए विशेष प्राथमिकतायें प्रदान की गयीं। सरकारी तथा गैर सरकारी प्रयासों के फलस्वरुप 40 वर्ष पश्चात् 1991 में कुल साक्षरता 16. 67 से बढ़कर 52.21 प्रतिशत तक पहुंच गयी। पुरुष साक्षरता 24.95 प्रतिशत से 64.13 प्रतिशत और स्त्री साक्षरता 7.93 प्रतिशत से 39.29 प्रतिशत हो गयी। जनगणना 2011 के अनुसार भारत की 74.4 प्रतिशत जनसंख्या साक्षर है। साक्षर जनसंख्या का प्रतिशत पुरुषों में 82.64 प्रतिशत और स्त्रियों में 65.46 प्रतिशत है।

भारत में आबादी कम करने के लिए कई उपाय किये गए हैं। तेजी से बढती जनसंख्या आर्थिक वृद्धि और जीवन स्तर पर दुष्प्रभाव डालेगी, इस बात की चिंता के चलते 1950 के दशक के आखिर और 1960 के दशक के शुरू में भारत ने एक आधिकारिक परिवार नियोजन कार्यक्रम लागू किया। विश्व में ऐसा करने वाले यह पहला देश था।

साक्षात्कार अनुसूची के आधार पर पुरानी पीढ़ी अर्थात् वृद्ध व्यक्तियों से प्राप्त तथ्यों का यहाँ तालिकाओं के माध्यम से विवरण प्रस्तुत किया जा रहा है–

तालिका 1: क्या नई पीढ़ी के जीवनशैली से आप खुश हैं?

क्र.सं.	उम्र समूह स्तर	अभिमत				कुल
		हाँ		नहीं		
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
1.	60–62 वर्ष	24	12.00	20	10.00	44 (22.00)
2.	63–65 वर्ष	19	09.50	22	11.00	41 (20.50)
3.	66–68 वर्ष	32	16.00	27	13.50	59 (29.50)
4.	69–71 वर्ष	20	10.00	16	08.00	36 (18.00)
5.	71 वर्ष से अधिक	12	06.00	08	04.00	20 (10.00)
कुल		107	53.50	93	46.50	200 (100.00)

अध्ययन के दौरान प्राप्त तथ्यों के आधार पर स्पष्ट होता है कि सम्मिलित बुजुर्ग उत्तरदाताओं में से 53.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार वे नई पीढ़ी के जीवनशैली से खुश हैं। उनके रहन–सहन, खान–पान आदि से उन्हें कोई शिकायत नहीं है, किन्तु 46.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार वर्तमान समय में नई पीढ़ी के द्वारा जीने वाला जीवनशैली से वे खुश नहीं है।

तालिका 2: यदि नहीं, तो क्यों

क्र.सं.	उम्र समूह स्तर	अभिमत				कुल
		अनुशासनहीनता		भागमभाग जिंदगी		
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
1.	60–62 वर्ष	13	06.50	07	03.50	20 (10.00)
2.	63–65 वर्ष	12	06.00	10	05.00	22 (11.00)
3.	66–68 वर्ष	15	07.50	12	06.00	27 (13.50)
4.	69–71 वर्ष	10	05.00	06	03.00	16 (08.00)
5.	71 वर्ष से अधिक	04	02.00	04	02.00	08 (04.00)
कुल		54	27.00	39	19.50	93 (46.50)

ज्ञातव्य है कि 46.50 प्रतिशत उत्तरदाता नई पीढ़ी के जीवनशैली से खुश नहीं हैं। जब उनसे इसके कारण के बारे में पूछा गया तो उनमें से 27 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार नई पीढ़ी के जीवनशैली में अनुशासनहीनता बढ़ गई है जिसके कारण वे खुश नहीं है, जबकि 19.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार वर्तमान समय में नई पीढ़ी की जीवनशैली भागमभाग जिंदगी के रूप में परिवर्तित हो गई जिसे वे खुश नहीं है।

तालिका 3: क्या नई पीढ़ी के लड़का एवं लड़की की सोच एक समान है?

क्र.सं.	उम्र समूह स्तर	अभिमत				कुल
		हाँ		नहीं		
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
1.	60–62 वर्ष	22	11.00	22	11.00	44 (22.00)
2.	63–65 वर्ष	33	15.00	11	05.50	41 (20.50)
3.	66–68 वर्ष	42	21.00	17	08.50	59 (29.50)
4.	69–71 वर्ष	29	14.50	07	03.50	36 (18.00)
5.	71 वर्ष से अधिक	09	04.50	11	05.50	20 (10.00)
कुल		135	66.00	68	34.00	200 (100.00)

क्षेत्रीय अध्ययन के क्रम में चयनित उत्तरदाताओं से मिली जानकारी के अवलोकन से ज्ञात होता है कि अध्ययन में सम्मिलित 66 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार नई पीढ़ी के लड़का एवं लड़की दोनों की सोच एक समान है, उनकी सोच में कोई अन्तर नहीं है, जबकि 34 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार सभी नई पीढ़ी के लड़का एवं लड़की की सोच एक समान है। लड़कों की अपेक्षा लड़कियों में अभी भी अपने बुजुर्ग के प्रति संवेदना है।

तालिका 4: युवा वर्ग से मतभिन्नता के प्रमुख कारण क्या हैं?

क्र.सं.	उम्र समूह स्तर	अभिमत					कुल
		शिक्षा	आधुनिकता	पाश्चात्य सभ्यता	नगरीकरण	प्रौद्योगिकी–करण	
		संख्या / प्रतिशत	संख्या / प्रतिशत	संख्या / प्रतिशत	संख्या / प्रतिशत	संख्या / प्रतिशत	
1.	60–62 वर्ष	00 / 00.00	18 / 09.00	24 / 12.00	05 / 02.50	06 / 03.00	44 (22.00)
2.	63–65 वर्ष	03 / 01.50	21 / 10.50	14 / 07.00	04 / 02.00	00 / 00.00	41 (20.50)
3.	66–68 वर्ष	00 / 00.00	26 / 13.00	22 / 11.00	06 / 03.00	05 / 02.50	59 (29.50)
4.	69–71 वर्ष	00 / 00.00	16 / 08.00	20 / 10.00	00 / 00.00	00 / 00.00	36 (18.00)
5.	71 वर्ष से अधिक	00 / 00.00	08 / 04.00	12 / 06.00	00 / 00.00	00 / 00.00	20 (10.00)
कुल		03 / 01.50	80 / 40.00	92 / 46.00	15 / 07.50	11 / 05.50	200 (100.00)

साक्षात्कार के दौरान में जब उत्तरदाताओं से युवा वर्ग से मतभिन्नता के प्रमुख कारण के बारे में पूछा गया तो 01.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार युवा वर्ग से मतभिन्नता के प्रमुख कारण शिक्षा है, जबकि 40 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार युवा वर्ग से मतभिन्नता के प्रमुख कारण आधुनिकता है, 46 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार युवा वर्ग से मतभिन्नता के प्रमुख कारण पाश्चात्य सभ्यता है, 07.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार युवा वर्ग से मतभिन्नता के प्रमुख कारण नगरीकरण है जबकि 05.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार युवा वर्ग से मतभिन्नता के प्रमुख कारण प्रौगिकीरण है।

तालिका 5: क्या युवा वर्ग बुजुर्ग के हर विचार से असहमत होते हैं?

क्र.सं.	उम्र समूह स्तर	अभिमत				कुल
		हाँ		नहीं		
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
1.	60–62 वर्ष	18	09.00	26	13.00	44 (22.00)
2.	63–65 वर्ष	20	10.00	21	10.50	41 (20.50)
3.	66–68 वर्ष	28	14.00	31	15.50	59 (29.50)
4.	69–71 वर्ष	17	08.50	19	09.50	36 (18.00)
5.	71 वर्ष से अधिक	10	05.00	10	05.00	20 (10.00)
कुल		93	46.50	107	53.50	200 (100.00)

उपर्युक्त तालिका के आधार पर ज्ञात होता है कि चयनित 46.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार युवा वर्ग बुजुर्ग के हर विचार से असहमत होते हैं, उनके विचार में अनेक खामियाँ गिना देते हैं, जबकि 53.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार युवा वर्ग बुजुर्ग के हर विचार से असहमत नहीं होते हैं, हाँ इतना तो सत्य है कि उनके अधिकांश बिचारों से पूर्णरूपेण सहमत नहीं होते हैं।

तालिका 6: यदि हाँ, तो अपनी बात मनवाने के लिए आप क्या करते हैं?

क्र.सं.	उम्र समूह स्तर	अभिमत				कुल
		डाँटते हैं	मारते–पीटते हैं	अनशन करते हैं	समझाते हैं	
		संख्या / प्रतिशत	संख्या / प्रतिशत	संख्या / प्रतिशत	संख्या / प्रतिशत	
1.	60–62 वर्ष	06 / 03.00	00 / 00.00	02 / 01.00	10 / 05.00	18 (09.00)
2.	63–65 वर्ष	04 / 02.00	00 / 00.00	00 / 00.00	16 / 08.00	20 (10.00)
3.	66–68 वर्ष	00 / 00.00	00 / 00.00	00 / 00.00	28 / 14.00	28 (14.00)
4.	69–71 वर्ष	00 / 00.00	00 / 00.00	00 / 00.00	17 / 08.50	17 (08.50)
5.	71 वर्ष से अधिक	00 / 00.00	00 / 00.00	00 / 00.00	10 / 05.00	10 (05.00)
कुल		10 / 05.00	00 / 00.00	02 / 01.00	81 / 40.50	93 (46.50)

साक्षात्कार के दौरान मिली जानकारी से ज्ञात होता है जिन 46. 50 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार युवा वर्ग बुजुर्ग के हर विचार से असहमत होते हैं, उनमें जब पूछा गया कि तब वे अपनी बात मानने के लिए क्या करते हैं तो उनमें से 05 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार वे अपनी बात मनवाने के लिए उन्हें डॉटते हैं, 01 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार वे अपनी बात मनवाने के लिए अनशन करते हैं, जबकि 40.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार के अनुसार के अपनी बात मनवाने के लिए उन्हें समझाते हैं कि क्या अच्छा है क्या बुरा।

तालिका 7: क्या युवा वर्ग परंपरागत रीति–रिवाज को निभाते हैं?

क्र.सं.	उम्र समूह स्तर	अभिमत				कुल
		हाँ		नहीं		
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
1.	60–62 वर्ष	20	40.00	24	12.00	44 (22.00)
2.	63–65 वर्ष	19	09.50	22	11.00	41 (20.50)
3.	66–68 वर्ष	21	10.50	38	19.00	59 (29.50)
4.	69–71 वर्ष	18	09.00	18	09.00	36 (18.00)
5.	71 वर्ष से अधिक	09	04.50	11	05.50	20 (10.00)
कुल		87	43.50	113	56.50	200 (100.00)

क्षेत्रीय अध्ययन के दौरान उत्तरदाताओं से मिली जानकारी से ज्ञात होता है कि चयनित 43.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने सकारात्मक जबाव देते हुए स्पष्ट किया कि युवा वर्ग परंपरागत रीति–रिवाजों को निभाते हैं, जबकि 56.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं ने नकरात्मक जबाव देते हुए स्पष्ट किया कि आज आधुनिकात की चकाचौंध तथा पाश्चात्य संस्कृति के कारण युवा वर्ग परंपरागत रीति–रिवाज को नहीं निभाते हैं।

तालिका 8: यदि नहीं, तो आप उन्हें छोड़ देते है?

क्र.सं.	उम्र समूह स्तर	अभिमत				कुल
		हाँ		नहीं		
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
1.	60–62 वर्ष	08	04.00	16	08.00	24 (12.00)
2.	63–65 वर्ष	10	05.00	12	06.00	22 (11.00)
3.	66–68 वर्ष	22	11.00	16	08.00	38 (19.00)
4.	69–71 वर्ष	09	04.50	09	04.50	18 (09.00)
5.	71 वर्ष से अधिक	07	03.50	04	02.00	11 (05.50)
कुल		**56**	**28.00**	**57**	**28.50**	**87 (43.50)**

साक्षात्कार के दौरान जिन 43.50 उत्तरदाताओं ने अपने मत प्रकट करते हुए स्पष्ट किया कि युवा वर्ग परंपरागत रीति–रिवाज को नहीं निभाते हैं उनसे जब यह पूछा गया कि तो क्या आप उन्हें छोड़ देते हैं, तब उनमें से 28 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार वे उन्हें छोड़ देते हैं, जबकि 28.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार वे उन्हें समझाते हैं कि हमारी परंपरागत रीति–रिवाज हमारी धरोहर है। इसका पालन करना चाहिए।

तालिका 9: क्या पारिवारिक विघटन का प्रमुख कारण अन्तर पीढ़ी संघर्ष है?

क्र.सं.	उम्र समूह स्तर	अभिमत				कुल
		हाँ		नहीं		
		संख्या	प्रतिशत	संख्या	प्रतिशत	
1.	60–62 वर्ष	30	15.00	14	07.00	44 (22.00)
2.	63–65 वर्ष	25	12.50	16	08.00	41 (20.50)
3.	66–68 वर्ष	34	17.00	25	12.50	59 (29.50)
4.	69–71 वर्ष	30	15.00	06	03.00	36 (18.00)
5.	71 वर्ष से अधिक	20	10.00	00	00.00	20 (10.00)
कुल		139	69.50	61	30.50	200 (100.00)

क्षेत्रीय अध्ययन के दौरान उत्तरदाताओं से मिली जानकारी से ज्ञात होता है कि 69.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार पारिवारिक विघटन का प्रमुख कारण अन्तर पीढ़ी संघर्ष है, जबकि 30.50 प्रतिशत उत्तरदाताओं के अनुसार पारिवारिक विघटन का कारण अन्तर पीढ़ी संघर्ष के साथ आर्थिक कारण भी है क्योंकि वर्तमान समय में अधिकांश समस्याओं का जड़ आर्थिक ही होता है।

निष्कर्ष :

तीव्र जनसंख्या वृद्धि के कारण देश में बेरोजगारी, निर्धनता, आवास की समस्या, पर्यावरणीय समस्या आदि में निरंतर वृद्धि हो रही है। जनसंख्या वृद्धि ही अधिकांश सामाजिक–आर्थिक समस्यायों की जड़ बन गयी है। अतः अपने देश में जनसंख्या वृद्धि के लिए उत्तरदायी कारणों तथा तीव्र जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणामों को समझना और जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने के उपायों पर ध्यान देना आवश्यक है।

संदर्भ :

1. किंग्सले डेविस (1949) : ह्यूमन सोसायटी, मैकमिलन एण्ड को., लन्दन, पृ.– 334
2. एस.एन.अग्रवाल (1977) : इंडियन पोपुलेशन प्रोब्लेम, नई दिल्ली, पृ.– 27
3. वहीं, 28
4. पी.कौर (1974) : रिलिजन एण्ड बर्थ कंट्रोल, रिलिजन एण्ड मेडिसिन रिसर्च जर्नल, वाराणसी, पृ.– 73–77
5. ए.के.सिंह (2014) : पोपुलेशन एण्ड सेटलमेन्ट, इंटर इंडिया पब्लिकेशन, नई दिल्ली, पृ.– 60